सोमालीलैंड अब कूटनीतिक हाशिये का विषय नहीं: मान्यता, लाल सागर की भू-राजनीति और चीन की रणनीतिक दुविधा

UPSC प्रासंगिकता

- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 2:** अंतर्राष्ट्रीय संबंध, राज्यों की मान्यता, चीन-अफ्रीका संबंध
- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 3:** समुद्री सुरक्षा, रणनीतिक चोक पॉइंट्स (संकुचित मार्ग)
- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 4:** विदेश नीति में नैतिकता—सिद्धांत बनाम व्यावहारिकता

चर्चा में क्यों

- दिसंबर 2025 में, इज़राइल ने औपचारिक रूप से सोमालीलैंड को एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता दी।
- इसने उस लंबे समय से चले आ रहे अंतर्राष्ट्रीय आम सहमति को तोड़ दिया जो सोमालीलैंड को सोमालिया के हिस्से के रूप में मानती है।
- इस कदम ने सोमालीलैंड को एक मामूली कूटनीतिक मुद्दे से बदलकर 'हॉर्न ऑफ अफ्रीका' में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का एक केंद्रीय क्षेत्र बना दिया है।
- इसके चीन, लाल सागर की सुरक्षा और वैश्विक भू-राजनीति के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं।

पृष्ठभूमि: सोमालीलैंड और राज्य के दर्जे का प्रश्न

- सोमाली राज्य के पतन के बाद, 1991 में सोमालीलैंड ने सोमालिया से स्वतंत्रता की घोषणा की।
- तब से, इसने:
  - सापेक्ष शांति और आंतरिक स्थिरता बनाए रखी है
  - कार्यशील राजनीतिक संस्थानों का निर्माण किया है
  - तीन दशकों में प्रतिस्पर्धी चुनाव आयोजित किए हैं
- इसके बावजूद, सोमालीलैंड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपरिचित रहा है, जिसका मुख्य कारण है:

- सोमालिया की क्षेत्रीय अखंडता के प्रति प्रतिबद्धता
- अन्य स्थानों पर अलगाववादी आंदोलनों को बढ़ावा मिलने का डर

- इज़राइल की मान्यता इस कूटनीतिक आम सहमति में पहली बड़ी सेंध है।

इज़राइल की मान्यता क्यों मायने रखती है

- इज़राइल का निर्णय प्रतीकात्मक नहीं है; यह रणनीतिक है:
  - अदन की खाड़ी और बाब अल-मंडेब जलडमरूमध्य के पास सोमालीलैंड की स्थिति इसे अत्यधिक समुद्री महत्व देती है।
  - मान्यता संभावित रूप से सुरक्षा, खुफिया और लॉजिस्टिक्स सहयोग के द्वार खोलती है।
  - यह गाजा, यमन और लाल सागर के संघर्षों द्वारा पहले से ही सैन्यीकृत क्षेत्र में संतुलन को बदल देती है।
- इसके हॉर्न ऑफ अफ्रीका से कहीं आगे तक व्यापक प्रभाव हैं।

चीन की मुख्य रणनीतिक दुविधा

- सभी वैश्विक अभिनेताओं में, चीन को तीन महत्वपूर्ण हितों के टकराव के कारण सबसे कठिन रणनीतिक चुनौती का सामना करना पड़ रहा है:

1. 'वन चाइना' सिद्धांत और ताइवान

- चीन सोमालीलैंड को "सोमालिया का अविभाज्य हिस्सा" मानता है।
- 2020 में, सोमालीलैंड ने ताइवान के साथ आधिकारिक संबंध स्थापित किए, जिसने सीधे बीजिंग को चुनौती दी।
- हरगेसा (सोमालीलैंड की राजधानी) में ताइवान की उपस्थिति सोमालीलैंड को अफ्रीका में एक वैचारिक और कूटनीतिक अपवाद बनाती है।
- सोमालीलैंड को मान्यता देना ताइवान की संप्रभुता के खिलाफ चीन के तर्क को कमजोर करेगा, जो बीजिंग के लिए एक 'रेड लाइन' (अंतिम सीमा) है।

2. लाल सागर और समुद्री सिल्क रोड की सुरक्षा

- बाब अल-मंडेब जलडमरूमध्य चीनी व्यापार और ऊर्जा के लिए एक महत्वपूर्ण 'चोक पॉइंट' (संकुचित मार्ग) है।
- बीजिग इसे वैश्विक वाणिज्य की "जुगुलर वेन" (मुख्य नस) कहता है।
- बीजिग ने इस गलियारे को सुरक्षित करने के लिए 2017 में जिबूती में अपना पहला विदेशी सैन्य अड्डा स्थापित किया था।
- यदि सोमालीलैंड इज़राइल, यूएई या अमेरिका के समर्थन से एक प्रतिद्वंद्वी सुरक्षा और लॉजिस्टिक्स केंद्र के रूप में उभरता है, तो यह जिबूती के पास चीन के रणनीतिक प्रभुत्व को कम कर सकता है।

IAS-PCS Institute

3. अफ्रीका में महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा

- चीन ने पूरे अफ्रीका में बंदरगाहों, बुनियादी ढांचे और राजनीतिक संबंधों में भारी निवेश किया है।
- इज़राइल की मान्यता से निम्नलिखित जोखिम हैं:
    - अमेरिका और पश्चिम के फिर से जुड़ाव को प्रोत्साहित करना।
    - हॉर्न ऑफ अफ्रीका में एक वैकल्पिक सुरक्षा संरचना बनाना।
    - चीन के दीर्घकालिक प्रभाव को कमजोर करना।

चीन के संप्रभुता सिद्धांत की सीमाएं

- चीन पारंपरिक रूप से आंतरिक वैधता को राज्य के आधार के रूप में खारिज करता है। हालांकि, सोमालीलैंड एक चुनौती पेश करता है:
    - यह सोमालिया की तुलना में अधिक स्थिर है।
    - यह व्यवहार में एक राज्य की तरह कार्य करता है।
    - इसने बिना किसी बाहरी शांति रक्षकों के शासन को बनाए रखा है।

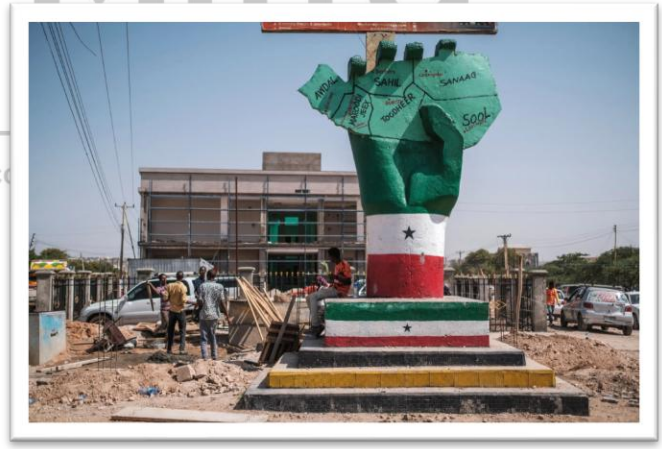

- यह संप्रभुता के प्रति चीन के दृष्टिकोण की कठोरता और विरोधाभासों को उजागर करता है—विशेष रूप से जब इसकी व्यावहारिक वैश्विक महत्वाकांक्षाओं के साथ तुलना की जाती है।

@resultmitra www.resultmitra.com

बीजिग की संभावित प्रतिक्रिया: हाइब्रिड (मिश्रित) रणनीति

- चीन एक कठिन समझौते का सामना कर रहा है:

- संप्रभुता के मानदंडों की रक्षा के लिए मान्यता का विरोध करना।
- ऐसी अति-प्रतिक्रिया से बचना जो सोमालीलैंड को प्रतिद्वंद्वियों के करीब धकेल दे।

- नतीजतन, बीजिंग द्वारा हाइब्रिड उपाय अपनाने की संभावना है, जिनमें शामिल हैं:
  - आर्थिक दबाव।
  - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के माध्यम से कूटनीतिक पैरवी।
  - क्षेत्रीय अखंडता पर नैरेटिव बनाने के लिए स्टार-टाइम्स जैसे मीडिया नेटवर्क का उपयोग करते हुए सूचना युद्ध।
  - प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बजाय शांत राजनीतिक प्रभाव संचालन।
- यह चीन को बिना अपनी "हस्तक्षेप न करने वाले भागीदार" की छवि को नुकसान पहुँचाए कार्य करने की अनुमति देता है।

मध्य पूर्व की राजनीति चीन की स्थिति को जटिल बना रही है

- चीन का तेजी से मुखर होता फिलिस्तीन समर्थक रुख एक और परत जोड़ता है:
  - यह इज़राइल के कदम के प्रति बीजिंग के नैतिक विरोध को मजबूत करता है।
  - यह अरब और 'ग्लोबल साउथ' के दर्शकों के बीच अच्छा प्रभाव डालता है।
  - लेकिन यह चीन को पश्चिम एशियाई प्रतिद्वंद्विता में उलझाने का जोखिम उठाता है, जिससे उसकी पारंपरिक रूप से तटस्थ मुद्रा कमजोर होती है।

- इस प्रकार, सोमालीलैंड हॉर्न ऑफ अफ्रीका की भू-राजनीति को मध्य पूर्व के संघर्षों से जोड़ता है।

व्यापक भू-राजनीतिक पुनर्गठन

- इज़राइल की मान्यता अकेली नहीं है:
  - इथियोपिया (2024) ने बंदरगाह पहुँच के बदले सोमालीलैंड को मान्यता देने के लिए एक समझौते (MoU) पर हस्ताक्षर किए।
  - सोमालीलैंड में एक लोकतांत्रिक भागीदार के रूप में अमेरिकी कांग्रेस की बढ़ती रुचि।
  - लाल सागर और बंदरगाह भू-राजनीति द्वारा संचालित यूएई का मौन समर्थन।
- प्रत्येक अतिरिक्त मान्यता सोमालीलैंड को कूटनीतिक रूप से अलग-थलग रखने की चीन की लागत को बढ़ाती है।

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

आगे की राह: आगे क्या है

- **चीन के लिए:**
  - सिद्धांत को व्यावहारिकता के साथ संतुलित करना।
  - ताइवानी, इजरायली और पश्चिमी प्रभाव के विस्तार को रोकना।
  - वैश्विक व्यापार के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र को अस्थिर करने से बचना।
- **क्षेत्र के लिए:**
  - प्रॉक्सी (छद्म) प्रतिस्पर्धा और सैन्यीकरण का जोखिम।
  - सोमालिया की क्षेत्रीय अखंडता का संभावित क्षरण।
  - हॉर्न ऑफ अफ्रीका का बढ़ा हुआ रणनीतिक महत्व।
- **वैश्विक व्यवस्था के लिए:**
  - मान्यता के मानदंडों की पुनर्व्याख्या।
  - भारत-प्रशांत, पश्चिम एशिया और अफ्रीकी भू-राजनीति का अधिक मिलन।
  - रणनीतिक अभिनेताओं के रूप में मध्यम शक्तियों और 'डी फैक्टो' (वास्तविक) राज्यों का उदय।

निष्कर्ष

- इज़राइल की मान्यता ने सोमालीलैंड के कूटनीतिक हाशिये पर होने की स्थिति को निर्णायक रूप से समाप्त कर दिया है।
- इसने इस क्षेत्र को वैश्विक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के केंद्र में धकेल दिया है, विशेष रूप से बदलते गठबंधनों के दौर में चीन के 'संप्रभुता-प्रथम' दृष्टिकोण की सीमाओं को उजागर किया है।
- हॉर्न ऑफ अफ्रीका, जो कभी परिधीय था, अब एक महत्वपूर्ण रंगमंच है जहाँ व्यापार मार्ग, विचारधारा और महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता आपस में मिलती है।

UPSC PRELIMS परीक्षा अभ्यास प्रश्न

Q1. सोमालीलैंड के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सोमालीलैंड ने 1991 में सोमाली राज्य के पतन के बाद स्वतंत्रता घोषित की।
2. सोमालीलैंड संयुक्त राष्ट्र का सदस्य है।

3. सोमालीलैंड ने प्रतिस्पर्धी चुनाव कराए हैं और आंतरिक स्थिरता बनाए रखी है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही हैं?

A) केवल 1 और 2

B) केवल 1 और 3

C) केवल 2 और 3

D) 1, 2 और 3

IAS-PCS Institute

सही उत्तर: B (केवल 1 और 3)

Q2. बाब एल-मांडेब जलडमरु क्यों रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है?

A) लाल सागर और भूमध्य सागर को जोड़ता है

B) लाल सागर और अदन की खाड़ी को जोड़ता है

C) फारस की खाड़ी और अरब सागर को जोड़ता है

D) अदन की खाड़ी और हिन्द महासागर को जोड़ता है

सही उत्तर: B (लाल सागर और अदन की खाड़ी को जोड़ता है)

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

Q3. निम्नलिखित देशों में से किसने जिबूती में अपना पहला विदेशी सैन्य अड्डा स्थापित किया?

A) अमेरिका

B) फ्रांस

C) चीन

D) रूस

सही उत्तर: C (चीन)